टिप्पणी

4

मनोवैज्ञानिक जांच के तरीके-II

"डॉ. शालिनी एक विद्यालय प्राचार्य हैं। वह परीक्षा के तनाव और चिंता के मुद्दे को लेकर चिंतित है जो उसके छात्र हाल ही में रिपोर्ट कर रहे हैं। वह इस स्थिति का अध्ययन करना चाहती है, इसलिए सभी कक्षा शिक्षकों को निर्देश दिया गया कि वे सभी छात्रों से व्यक्तिगत रूप से प्रश्नों का एक समुच्चय पूछें और उनके उत्तर अभिलेख करें। छात्रों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया और इसमें उन छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में भी गिरावट देखी गई; जो अन्यथा लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे। डॉ. शालिनी इस अहसास से चिंतित महसूस करती हैं कि दबाव का उनके छात्रों के प्रदर्शन पर असर पड़ रहा है। इसके बाद वह यह जांच करना चाहती है कि कौन सी कक्षाएँ हैं जिनमें छात्र सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। उन श्रेणी की पहचान करने के बाद, वह चाहती हैं कि विद्यालय परामर्शदाता इन छात्रों से बात करें और यह जानकारी प्राप्त करें कि उनकी चिंता के क्षेत्र क्या हैं। उनका मानना है कि जब तक प्रभावित छात्रों और विद्यालय अधिकारियों के बीच संवाद स्थापित नहीं हो जाता, तब तक इस समस्या का कोई ठोस समाधान नहीं निकाला जा सकता है।" बताया गया उदाहरण स्पष्ट रूप से अनुसंधान के कुछ तरीकों की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालता है जो लोगों के अनुभवों की व्यवस्थित जांच को सक्षम बनाता है। ऐसी शोध विधियां गुणात्मक दृष्टिकोण का पालन करती हैं जहां अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक पहलुओं की प्रकृति को समझने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

पिछले अध्याय में, आपने मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में उपयोग की जाने वाली कुछ विधियों के बारे में सीखा है, जो प्रायोगिक और सहसंबंधात्मक हैं; उनकी मूल मात्रात्मक प्रकृति, अनुप्रयोग और साथ ही ताकत और सीमाएँ। जैसा कि हम जानते हैं, मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन शाखा है जो पूछताछ के विभिन्न तरीकों से मन और व्यवहार की जटिलताओं को समझने का प्रयास करता है। इस अध्याय में, आप मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की कुछ अन्य विधियों का अध्ययन करेंगे, जिसमें उनकी विविध प्रकृति और अनुप्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। बाद में अध्याय में, अनुसंधान से संबंधित नैतिक मुद्दों पर चर्चा की जाएगी ताकि शिक्षार्थी न केवल अनुसंधान विधियों के सैद्धांतिक पहलुओं को समझ सके बल्कि विधियों के प्रभावी अनुप्रयोग के लिए ध्यान में रखे जाने वाले नैतिक विचारों को भी समझ सके।

टिप्पणी

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद, शिक्षार्थी:

- मनोविज्ञान में बुनियादी अनुसंधान कौशल की रूपरेखा तैयार करते हैं;
- मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में उपयोग की जाने वाली विभिन्न विधियों की जांच करते हैं;
- मनोविज्ञान में विभिन्न नैतिक मुद्दों की व्याख्या करते हैं; और
- मनोवैज्ञानिक जांच करते समय विभिन्न नैतिक चिंताओं को समझते हैं।

4.1 वर्णनात्मक अनुसंधान क्या है?

पिछले अध्याय में हमने प्रायोगिक एवं सहसंबंध अनुसंधान के बारे में विस्तार से चर्चा की है। अब इस अध्याय में हम दूसरे प्रकार के शोध यानी वर्णनात्मक शोध पर चर्चा करेंगे। मौजूदा स्थिति का विस्तार से वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक शोध का उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग सामान्य या विशिष्ट व्यवहारों और विशेषताओं का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिन्हें देखा और मापा जाता है। ऐसी स्थितियों में जहां किसी विशेष क्षेत्र में पर्याप्त शोध उपलब्ध नहीं है, एक प्रयोग को अभिकल्प करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे मामलों में, एक शोधकर्ता अक्सर एक प्रयोग या सहसंबंधी अध्ययन को अभिकल्प करने से पहले विषय के बारे में अधिक जानकारी इकट्ठा करने के लिए एक गैर-प्रयोगात्मक दृष्टिकोण, जैसे कि एक वर्णनात्मक अध्ययन, से शुरुआत करता है। घटनाओं की मौजूदा स्थिति का वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान का उपयोग प्रयोगात्मक अध्ययन के विस्तार के रूप में भी किया जा सकता है यानी एक बार प्रयोगात्मक विश्लेषण द्वारा सुझाए गए समाधान को लागू किया जाता है। इस प्रकार वर्णनात्मक विधि जांच के प्रारंभिक और अंतिम दोनों चरणों में उपयोगी है।

वर्णनात्मक विश्लेषण बताता है कि क्या मौजूद है और नए तथ्यों को खोजने के लिए जमीन तैयार करने की कोशिश करता है। इसमें व्यक्तियों, व्यक्तियों के समूह, घटनाओं और स्थितियों से संबंधित प्रदत्त एकत्र करना और फिर प्राप्त प्रदत्तों को व्यवस्थित करना, सारणीबद्ध करना, चित्रित करना और वर्णन करना शामिल है। जैसा कि नाम से पता चलता है, यह दृष्टिकोण चर के बीच अनुमानित संबंधों का परीक्षण करने के बजाय चर का वर्णन करने के लिए लागू किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य वर्णन है। यह भविष्यवाणी नहीं करता और कारण एवं प्रभाव का निर्धारण नहीं करता।

टिप्पणी

इस प्रकार का शोध कौन, क्या, कहाँ और कैसे जैसे प्रश्नों पर केंद्रित होता है। उदाहरण के लिए: निम्नलिखित प्रश्नों की जांच के लिए वर्णनात्मक दृष्टिकोण लागू किया जा सकता है

- क्या शिक्षक स्कूलों में कंप्यूटर के उपयोग के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रखते हैं?
- आपकी नौकरी के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू क्या हैं?
- आपके घरेलू वातावरण के नकारात्मक पहलू क्या हैं?
- क्या छात्र प्रिंट आधारित पाठ्यपुस्तकें या ऑनलाइन किताबें पढ़ना पसंद करते हैं?
- पिछले 10 वर्षों में बाहरी गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी कैसे बदल गई है?

वर्णनात्मक अनुसंधान अपने दृष्टिकोण में मात्रात्मक या गुणात्मक हो सकता है। इसमें मात्रात्मक जानकारी का संग्रह शामिल हो सकता है जिसे संख्यात्मक रूप में सारणीबद्ध किया जा सकता है, जैसे कि विभिन्न आयु समूहों में टेक्स्ट संदेशों में इमोटिकॉन्स का उपयोग करने की आवृत्ति में मात्रात्मक अंतर, या यह गुणात्मक रूप से जानकारी की श्रेणियों जैसे मुद्दों उदाहरण के लिए सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन से संबंधित महिला यात्री की चिंताओं का वर्णन कर सकता है। मात्रात्मक और गुणात्मक सातत्य में, सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले पद्धतिगत दृष्टिकोण साक्षात्कार, सर्वेक्षण, अवलोकन अध्ययन, केस अध्ययन हैं।

आगे बढ़ने से पहले, यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये शोध विधियां दो प्रकार की हो सकती हैं, एक पार अनुभागीय अध्ययन या एक अनुदैर्ध्य अध्ययन।

पार अनुभागीय अध्ययन वह है जिसमें किसी विशिष्ट समय पर जनसंख्या से प्रदत्त एकत्र किया जाता है। अनुदैर्ध्य अभिकल्प की तुलना में शोधकर्ताओं द्वारा इसका अधिक उपयोग किया जाता है क्योंकि इसका संचालन करना आसान है और त्वरित परिणाम मिलते हैं। यह अभिकल्प तब उपयोगी हो जाता है जब लक्ष्य उस विशेष समय पर जनसंख्या की विशेषताओं को समझना है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि अध्ययन को दोहराया जाना है, तो नए प्रतिभागियों को भर्ती करने की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, गणित और विज्ञान में दसवीं कक्षा के छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन।

दूसरी ओर, *अनुदैर्ध्य अध्ययन* में एक ही प्रतिदर्श से समय की अवधि में बार–बार प्रदत्त संग्रह शामिल होता है। आवश्यक जानकारी के प्रकार के आधार पर, अनुदैर्ध्य अध्ययन कुछ वर्षों से लेकर दशकों तक बढ़ सकता है। यह अभिकल्प तब उपयोगी हो जाता है जब अध्ययन का उद्देश्य किसी समय अवधि में किसी व्यक्ति या समूह में परिवर्तन और विकास का निरीक्षण करना हो। कहने की जरूरत नहीं है, इसमें समय लगता है और ऐसे अध्ययनों की सफलता व्यक्तियों की निरंतर और सक्रिय भागीदारी पर अत्यधिक निर्भर है।

टिप्पणी

उदाहरण के लिए, 5, 15 और 25 वर्ष की आयु के व्यक्तियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं पर शोध।

4.2 वर्णनात्मक अनुसंधान विधियों के प्रकार

वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प के लिए उपयोग की जाने वाली सबसे आम विधियाँ सर्वेक्षण, प्रेक्षण, केस अध्ययन और साक्षात्कार हैं। ये विधियां शामिल परिमाणीकरण की उपाधि के संबंध में मात्रात्मक-गुणात्मक सातत्य के साथ भिन्न होती हैं।

4.2.1 मात्रात्मक दृष्टिकोण के साथ वर्णनात्मक विधि

सर्वेक्षण और प्रेक्षण दो विधियां हैं जो प्रदत्त संग्रह और विश्लेषण के लिए अधिक मात्रात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। हम इस अनुभाग में उनके बारे में और अधिक जानेंगे।

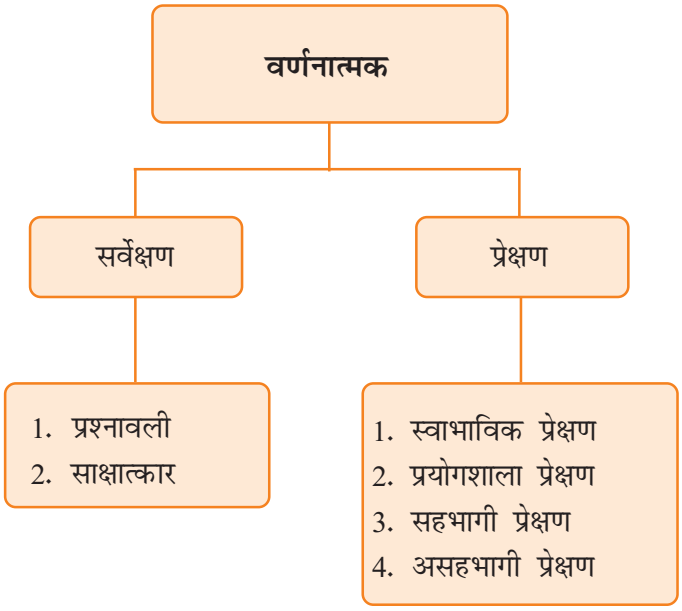

चित्र 4.1: मात्रात्मक वर्णनात्मक विधियों के प्रकार

4.2.1.1 सर्वेक्षण पद्धति

व्यक्तियों के विश्वास, राय, दृष्टिकोण, प्रेरणा और व्यवहार का अध्ययन करने के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान में सर्वेक्षण विधियों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। सर्वेक्षण विधि व्यक्तियों की विभिन्न विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करती है जो कुछ सामाजिक समूहों जैसे कि लिंग, आय, राजनीतिक और धार्मिक संबद्धता आदि की उनकी सदस्यता के आधार पर उभरती हैं। यह उन विशेषताओं पर भी विचार करती है जो प्रकृति में मनोवैज्ञानिक हैं जैसे कि राय, विश्वास आदि।

टिप्पणी

सर्वेक्षण के लिए प्रदत्त दो प्राथमिक तरीकों- प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया जा सकता है।

(I) प्रश्नावली: आम तौर पर, प्रश्नावली एक कागज और पेंसिल उपकरण है जो उत्तरदाताओं को दी जाती है। प्रश्नावली में कुछ प्रकार के प्रश्न शामिल होते हैं।

- ***खुले-अंत प्रश्न:*** खुले-अंत एकांश तब उपयोगी होते हैं जब शोधकर्ताओं को यह नहीं पता होता है कि प्रतिभागी कैसे प्रतिक्रिया दे सकते हैं या जब वे अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करने से बचना चाहते हैं और जब गहन जानकारी की आवश्यकता होती है। खुले-अंत प्रतिक्रियाएँ अधिकतर गुणात्मक प्रकृति की होती हैं।

  उदाहरण के लिए, कृपया उस समय का वर्णन करें जब आपको लगा कि आप परीक्षा के दबाव को संभालने में असमर्थ हैं।

- ***संक्षेपित प्रश्न:*** संक्षेपित प्रश्नों का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ताओं को प्रतिभागियों की विभिन्न प्रतिक्रियाओं का अच्छा अंदाजा होता है और उत्तरदाता को दिए गए विकल्पों में से चयन करना होता है। वे प्रकृति में अधिक मात्रात्मक हैं।

  उदाहरण के लिए, क्या आपको व्यायाम करना पसंद है? हां/नहीं

- ***मूल्यांकन प्रश्न:*** मूल्यांकन प्रश्न का उपयोग यह पता लगाने के लिए किया जाता है कि सर्वेक्षणकर्ता किसी चीज को कैसे मूल्यांकन देंगे। भर में लोगों की राय जानने के लिए यह काफी उपयोगी है।

  उदाहरण के लिए, आप किसी रेस्तरां की सेवा को 1-5 के पैमाने पर कैसे मूल्यांकन देंगे?

- ***बहुविकल्पीय प्रश्न:*** ऐसे प्रश्न उत्तरदाताओं को चुनने के लिए एकाधिक प्रतिक्रिया विकल्प प्रदान करते हैं।

  उदाहरण के लिए, आखिरी क्रिकेट विश्व कप कब खेला गया था?

  वर्ष 2016 2017 2018 2019 2023

सर्वेक्षण अनुसंधान में प्रश्नावली प्रशासन के तरीके

सर्वेक्षण चार तरीकों से प्रशासित किया जा सकता है: मेल के माध्यम से, टेलीफोन द्वारा, व्यक्तिगत रूप से या ऑनलाइन। इनमें से किस दृष्टिकोण का उपयोग करना है, यह तय करते समय, शोधकर्ता निम्न पर विचार करते हैं: अध्ययन प्रतिभागी से संपर्क करने और डेटा संग्रह की लागत, प्रतिभागियों का साक्षरता स्तर, प्रतिक्रिया दर की आवश्यकताएं, मांगी गई जानकारी की जटिलता और ओपन-एंड का मिश्रण और अंतिम प्रश्न मिश्रण।

टिप्पणी

(II) साक्षात्कार: दो व्यापक प्रकार के सर्वेक्षणों के बीच, साक्षात्कार अधिक व्यक्तिगत प्रकार के सर्वेक्षण हैं जो जांच करने में सक्षम बनाते हैं। जांच करने वाले प्रश्न आम तौर पर तात्कालिक होते हैं, जो उत्तरदाता के उत्तर पर आधारित होते हैं, और साक्षात्कारकर्ता को आवश्यक क्षेत्र में अधिक जानकारी प्राप्त करने की अनुमति देते हैं। प्रश्नावली उत्तरदाताओं के उत्तरों का पता लगाने के लिए अनुवर्ती प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता प्रदान नहीं करती है, लेकिन साक्षात्कार ऐसा करते हैं।

एक साक्षात्कार में दो व्यक्ति शामिल होते हैं - साक्षात्कारकर्ता के रूप में शोधकर्ता, और प्रत्यर्थी के रूप में प्रतिवादी। ऐसी कई सर्वेक्षण विधियाँ हैं जो साक्षात्कार का उपयोग करती हैं। ये व्यक्तिगत या आमने-सामने साक्षात्कार, टेलीफोनिक साक्षात्कार और हाल ही में, ऑनलाइन साक्षात्कार हैं। साक्षात्कार पद्धति पर अगले भाग में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

तालिका 1: सर्वेक्षण में दो प्रकार के प्रदत्त संग्रह उपकरणों का तुलनात्मक विश्लेषण

विधि	उद्देश्य	लाभ	हानि
प्रश्नावली	कम समय में बड़ी जानकारी इकट्ठा करना	-प्रतिदर्श समूह गुमनाम रह सकता है -प्रभावी लागत -बड़ी मात्रा में प्रदत्त इकट्ठा कर सकता है	-अधिक गहन जानकारी प्राप्त करना कठिन है
साक्षात्कार	भावनाओं को प्रतिबिंबित करने के लिए और अनुभव, और मुद्दों का अधिक गहराई से अन्वेषण करें	-प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया को निर्देशित किया जा सकता है -विशिष्ट प्रकार की जानकारी एकत्र की जा सकती है	-बहुत समय लगेगा -साक्षात्कार की व्यवस्था पर अधिक खर्च, यात्रा आदि

सर्वेक्षण विधि की सामर्थ्य

- एक विस्तृत प्रसार के प्रतिभागियों तक पहुंच।
- अन्य विधियों की तुलना में तेजी से प्रदत्त संग्रह।
- इससे कम खर्च में प्रदत्त संग्रह।

टिप्पणी

सर्वेक्षण विधि की सीमाएँ

- प्रदत्त गहराई में नहीं हो सकता है।
- प्रदत्त संग्रह के लिए उपयोग किए गए प्रतिदर्श में प्रतिनिधित्व की कमी हो सकती है।
- प्रदत्त शोधकर्ता की अपनी धारणा और पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकता है।

4.2.1.2 प्रेक्षण विधि

प्रेक्षण, प्रदत्त संग्रह की एक मौलिक तकनीक है जो समय के साथ दूसरे व्यक्ति के व्यवहार को बिना छेड़छाड़ और नियंत्रित किए देखने और सुनने को संदर्भित करती है। यह हमेशा एक निर्देशित गतिविधि होती है जिसका उपयोग व्यवहार की निम्नलिखित श्रेणियों का अध्ययन करने के लिए किया जा सकता है।

अशाब्दिक व्यवहार: आंखों की गति (आई मूवमेंट), चेहरे के भाव, शारीरिक मुद्राएं, हावभाव आदि सहित शारीरिक भाषा पर ध्यान केंद्रित करता है।

भाषाई व्यवहार: भाषण सामग्री पर केंद्रित है।

अतिरिक्त भाषाई व्यवहार: भाषण के साथ आने वाले किसी भी व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करता है जैसे स्वर, तीव्रता, पिच, आयतन आदि।

अवलोकन विधि के प्रकार

i. **स्वाभाविक/क्षेत्रीय:** प्रेक्षण एक ऐसा अध्ययन है जहां एक शोधकर्ता किसी विषय को उसके स्वाभाविक वातावरण में देखता है। इसमें रुचि के किसी वातावरण से केवल यह देखकर जानकारी एकत्र करना शामिल है कि क्या चल रहा है। यह प्राकृतिक दुनिया में जो होता है उसके बारे में टिप्पणियों को और अधिक सत्य बनाता है

   उदाहरण के लिए, एक शोधकर्ता सार्वजनिक और निजी स्कूलों में कक्षा के व्यवहार में अंतर का अध्ययन करना चाहता है, वह स्कूलों/कक्षाओं का दौरा कर सकता है और छात्रों के एक-दूसरे के साथ-साथ शिक्षकों के साथ व्यवहार का निरीक्षण कर सकता है।

ii. **प्रयोगशाला प्रेक्षण:** वह है जिसमें शोधकर्ता नियंत्रित वातावरण में विषय का प्रेक्षण करता है। शोधकर्ता यह तय करता है कि प्रेक्षण कहाँ, किस समय, किन प्रतिभागियों के साथ, किन परिस्थितियों में होगा और एक व्यवस्थित प्रक्रिया का उपयोग करता है।

   उदाहरण के लिए, आक्रामकता के स्तर पर विभिन्न प्रकार के वीडियो गेम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए, प्रतिभागियों को अलग-अलग समूहों में रखा जा सकता है और उन्हें विभिन्न श्रेणियों के वीडियो गेम खेलने के लिए कहा जा सकता है। फिर

टिप्पणी

उनके व्यवहार को देखा जाएगा और आक्रामकता के स्तर को देखने के लिए रिकॉर्ड किया जाएगा ।

iii. सहभागी प्रेक्षण वह है जिसमें शोधकर्ता प्रेक्षण स्थिति का एक अभिन्न अंग होता है। शोधकर्ता स्वतंत्र रूप से समूह के अन्य सदस्यों के साथ बातचीत करता है, समूह की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेता है, घटनाओं में डूब जाता है और प्रेक्षण के लिए समूह के नियमित पैटर्न को अपनाता है। इस प्रकार व्यवहार का अध्ययन अंदरूनी सूत्र के दृष्टिकोण से किया जाता है।

उदाहरण के लिए, एक प्रबंधक को ग्राहकों के साथ कर्मचारियों की संचार प्रभावशीलता का अध्ययन करने में रुचि हो सकती है। वह उनके साथ भाग लेते हुए उन्हें कुछ समूह गतिविधियों में शामिल कर सकता है और उस सहभागिता में उनके संचार कौशल का निरीक्षण कर सकता है।

iv. **असहभागी प्रेक्षण:** वह है जिसमें शोधकर्ता दूर का दृष्टिकोण अपनाता है और किसी घटना या व्यवहार को देखे जाने वाले समूह से जुड़े बिना एक बाहरी व्यक्ति के रूप में देखता है। सहभागी प्रेक्षण के विपरीत जहां शोधकर्ता समूह के सदस्यों के साथ जुड़कर सक्रिय भूमिका अपनाता है, असहभागी प्रेक्षण अवलोकन में शोधकर्ता किसी अन्य प्रकार की भागीदारी को ध्यान से देखकर और प्रतिबंधित करके अपेक्षाकृत निष्क्रिय भूमिका अपनाता है।

उदाहरण के लिए, एक शिक्षक छात्रों के लिए एक समूह गतिविधि का आयोजन कर सकता है और छात्रों की गतिविधियों में किसी भी तरह से भाग लिए बिना, उनमें नेतृत्व गुणों का निरीक्षण कर सकता है।

प्रेक्षण विधि की ताकत

- चूँकि यह ज्यादातर वास्तविक जीवन की स्थितियों में किया जाता है, इसलिए यह निष्कर्षों को सामान्य बनाने में मदद करता है।
- कम समय में बड़ी मात्रा में प्रदत्त एकत्र हो जाता है। इसका मतलब है कि एक बड़ा नमूना प्राप्त किया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप निष्कर्षों का प्रतिनिधित्व किया जा सकता है और बड़ी आबादी के लिए सामान्यीकृत करने की क्षमता हो सकती है।
- नए क्षेत्रों का पता लगाने और नवीन विचार उत्पन्न करने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

टिप्पणी

प्रेक्षण विधि की सीमाएँ

- शोधकर्ता को किसी स्थिति के उन पहलुओं को पहचानने में सक्षम होने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जो मनोवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण हैं और अधिक ध्यान देने योग्य हैं।
- यह पर्यवेक्षक पूर्वाग्रह के प्रति संवेदनशील है यानी पर्यवेक्षक का व्यक्तिपरक पूर्वाग्रह निष्कर्षों को प्रभावित कर सकता है।

क्रियाकलाप

अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर या मनोविज्ञान के बारे में जो चीजें आप पहले ही सीख चुके हैं, उन दो स्थितियों की सूची बनाएं जिन्हें आप क्रमशः प्राकृतिक प्रेक्षण और प्रयोगशाला प्रेक्षण का उपयोग करके तलाशना चाहेंगे।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. बताएं कि निम्नलिखित कथन 'सही' हैं या 'गलत'

   i.) प्रतिभागी प्रेक्षण में प्रेक्षण किए जाने वाले समूह के साथ पर्यवेक्षक की कोई भागीदारी नहीं होती है। सही/गलत

   ii.) बड़े पैमाने पर प्रदत्त संग्रह के लिए सर्वेक्षण का उपयोग किया जा सकता है। सही/गलत

   iii.) गुणात्मक अनुसंधान में केवल संख्यात्मक डेटा शामिल होता है। सही/गलत

2. निम्नलिखित का मिलान करें

(i.)	प्रयोगशाला प्रेक्षण	(अ)	वास्तविक जीवन की स्थितियों में सावधानीपूर्वक प्रेक्षण
(ii.)	प्राकृतिक प्रेक्षण	(ब)	प्रेक्षित समूह की गतिविधियों में किसी भी सक्रिय भागीदारी के बिना दूर का प्रेक्षण।
(iii.)	असहभागी प्रेक्षण	(स)	कृत्रिम स्थितियों में नियंत्रित प्रेक्षण

टिप्पणी

4.2.2 गुणात्मक दृष्टिकोण के साथ वर्णनात्मक विधियाँ

जैसा कि इस पाठ की शुरुआत में पहले ही बताया जा चुका है, वर्णनात्मक शोध या तो मात्रात्मक या गुणात्मक हो सकता है। इसमें मात्रात्मक जानकारी का संग्रह शामिल हो सकता है जैसे कि गाड़ी चलाते समय कोई व्यक्ति कितनी बार हॉर्न बजाता है या यह जानकारी की श्रेणियों का वर्णन कर सकता है जैसे कि अत्यधिक हॉर्न बजाने के पीछे पुरुषों और महिलाओं के बीच अंतर।

मात्रात्मक केंद्र के साथ वर्णनात्मक शोध में प्रदत्त एकत्र करना शामिल है जो घटनाओं का वर्णन करता है जिसे बाद में संख्यात्मक रूप से व्यवस्थित और सारणीबद्ध किया जाता है। जबकि गुणात्मक केंद्र के साथ, कुछ मामलों के गहन, कथात्मक विवरण का उपयोग विश्लेषण के दौरान प्रदत्त को पैटर्न में व्यवस्थित करने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जाता है। ये समृद्ध गुणात्मक विवरण केस अध्ययन और साक्षात्कार जैसे कुछ तरीकों का उपयोग करके सामने आ सकते हैं।

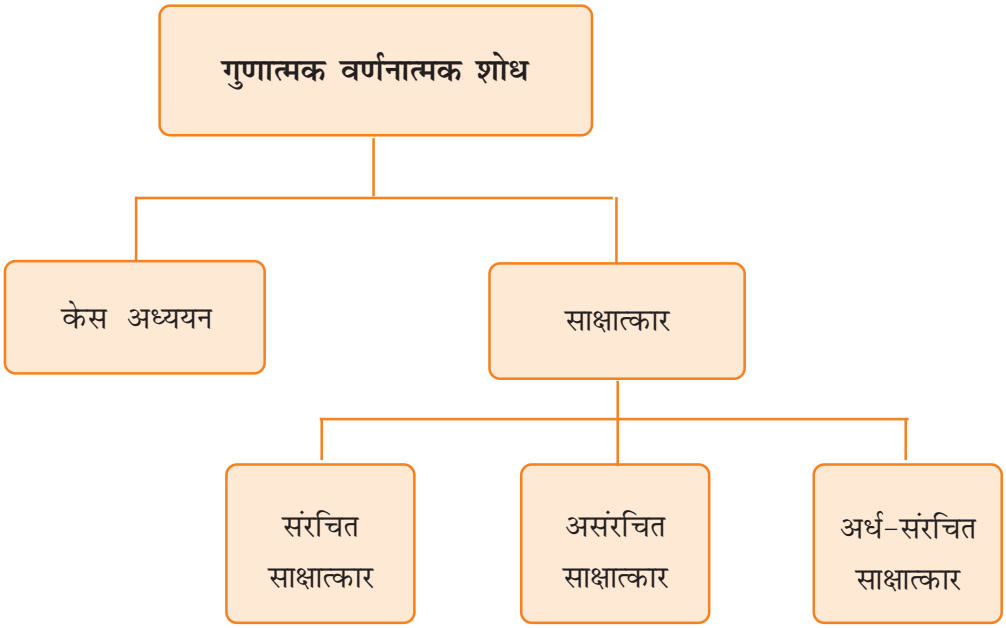

चित्र 4.2: गुणात्मक वर्णनात्मक विधियों के प्रकार

4.2.2.1 केस अध्ययन

वर्णनात्मक अनुसंधान में केस अध्ययन पद्धति में एक ही मामले का विस्तृत अध्ययन शामिल होता है, आमतौर पर समय की विस्तारित अवधि में। इसमें स्वाभाविक प्रेक्षण शामिल हो सकते हैं, और इसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण, साक्षात्कार, डायरी, अभिलेखीय प्रदत्त आदि शामिल हो सकते हैं। ये अक्सर लोगों के जीवन के गहन विस्तृत इतिहास या महत्वपूर्ण पहलुओं के वर्णनात्मक विवरण होते हैं।

टिप्पणी

केस क्या है?

किसी एक मामले का मतलब सिर्फ एक ही व्यक्ति नहीं है। यह एक परिवार, एक सामाजिक समूह या एक एकल संगठन भी हो सकता है। वास्तव में एक केस अध्ययन में कई व्यक्तियों से निपटना शामिल हो सकता है।

केस अध्ययन की मुख्य विशेषताएं

(अ) वर्णनात्मक: केस अध्ययन में एकत्र किए गए प्रदत्त में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं और घटनाओं और उन संदर्भों का वर्णन होता है जिनमें वे घटित हुए (गुणात्मक प्रदत्त)। मुख्य जोर हमेशा व्यवहार या अनुभव के मौखिक विवरण के निर्माण पर होता है लेकिन मात्रात्मक प्रदत्त भी एकत्र किया जा सकता है। साथ ही, उच्च स्तर का विवरण भी प्रदान किया जाता है।

(ब) संकीर्ण रूप से केंद्रित: एक केस अध्ययन जो आम तौर पर केवल एक व्यक्ति का विवरण प्रदान करता है, और कभी-कभी समूहों के बारे में भी। वितरण प्रदान करता है। अक्सर इस प्रकार की केस अध्ययन किसी व्यक्ति के सीमित पहलू पर केंद्रित होती है।

(स) वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक प्रदत्त को जोड़ता है: शोधकर्ता वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक प्रदत्त को जोड़ सकता है। सभी प्रदत्त को विश्लेषण के लिए वैध प्रदत्त माना जाता है, और केस अध्ययन के भीतर निष्कर्षों के आधार के रूप में भी माना जाता है - जिसमें व्यवहार के उद्देश्य विवरण और उसके संदर्भ के साथ-साथ व्यक्तिपरक पहलू, जैसे भावनाओं, विश्वासों आदि का विवरण भी शामिल है।

तालिका 2: मामलों के प्रकार

केस के प्रकार	विवरण
व्यक्ति	आम तौर पर कई अलग-अलग शोध विधियों का उपयोग करके एक ही व्यक्ति का अध्ययन।
समूह	लोगों के एक विशिष्ट समूह का अध्ययन, जैसे कि परिवार या दोस्तों का छोटा समूह।
स्थान	किसी विशेष स्थान का अध्ययन, और जिस तरह से लोगों द्वारा इसका उपयोग किया जाता है या माना जाता है।
संस्था	किसी एक संगठन या कंपनी का अध्ययन और उसमें लोगों के कार्य करने के तरीके का अध्ययन।
आयोजन	किसी विशेष सामाजिक या सांस्कृतिक घटना का अध्ययन और उसमें भाग लेने वाले लोगों द्वारा उस घटना की व्याख्या।

टिप्पणी

केस अध्ययन विधि की ताकत

- गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की व्यापक जानकारी एकत्र कर सकते हैं।
- घटना या अनुभव में अंतर्दृष्टि प्रदान करने में मदद करता है जिसे अन्यथा प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

केस अध्ययन विधि की सीमाएं

- चूँकि केवल एक ही मामला शामिल है, बाकी आबादी के लिए सामान्यीकरण बेहद सीमित है।
- बहुत समय लग सकता है
- शोधकर्ता की व्यापक और लंबी व्यस्तता के कारण, उनके विश्वास, राय और पूर्वाग्रह निष्कर्षों को प्रभावित कर सकते हैं।
- परिणामों की पुनरावृत्ति संभव नहीं है।

4.2.2.2 साक्षात्कार

जैसा कि हमने पहले ही सर्वेक्षण पद्धति के तहत डेटा की तकनीकों में से एक के रूप में साक्षात्कार के बारे में उल्लेख किया है, इस खंड में हम साक्षात्कार तकनीक पर विस्तार से ध्यान केंद्रित करेंगे। साक्षात्कार को एक गुणात्मक शोध तकनीक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें किसी विशेष विचार, कार्यक्रम या स्थिति पर उनके दृष्टिकोण का पता लगाने के लिए कम संख्या में उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछना शामिल है। इन्हें व्यक्तियों के साथ-साथ समूहों में भी संचालित किया जा सकता है। व्यक्तिगत साक्षात्कार वे होते हैं जहां एक समय में एक व्यक्ति का साक्षात्कार लिया जाता है, जबकि समूह साक्षात्कार में एक साथ कई उम्मीदवारों का साक्षात्कार लिया जाता है।

साक्षात्कार के तीन विभिन्न प्रारूप होते हैं: संरचित, अर्ध-संरचित और असंरचित।

(i.) संरचित साक्षात्कार: इनमें पूर्व-निर्धारित प्रश्नों की एक श्रृंखला शामिल होती है जिनका उत्तर सभी साक्षात्कारकर्ता एक ही क्रम में देते हैं। डेटा विश्लेषण आमतौर पर अधिक सरल होता है क्योंकि शोधकर्ता एक ही प्रश्न के लिए दिए गए विभिन्न उत्तरों की अंतर और तुलना कर सकता है। संरचित साक्षात्कार पूरे प्रतिदर्श (सैंपल) में तुलनीयता सुनिश्चित करने का प्रयास करने का एक तरीका है। एक संरचित साक्षात्कार में प्रश्नों को इस तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है कि प्रतिक्रियाओं की एक सीमित श्रृंखला प्राप्त हो।

टिप्पणी

उदाहरण के लिए, 'क्या आपको लगता है कि इस क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाएँ उत्कृष्ट/अच्छी/औसत या खराब हैं?' यह एक (क्लोज-एंडेड प्रश्न) का उदाहरण है जहां संभावित उत्तर पहले से परिभाषित होते हैं।

(ii.) असंरचित साक्षात्कार: असंरचित साक्षात्कार या गहन साक्षात्कार वे होते हैं जिनमें साक्षात्कार से पहले प्रश्न तैयार नहीं किए जाते हैं और डेटा संग्रह अनौपचारिक तरीके से किया जाता है। साक्षात्कारकर्ता सीमित संख्या में विषयों पर चर्चा करने के उद्देश्य से साक्षात्कार लेता है, कभी-कभी एक या दो तक, और साक्षात्कारकर्ता की पिछली प्रतिक्रिया के अनुसार क्रमिक प्रश्न तैयार करता है। इसका उपयोग अक्सर किसी व्यक्ति के अनुभव का विस्तृत विवरण प्राप्त करने के लिए किया जाता है। असंरचित साक्षात्कार उच्च स्तर के पूर्वाग्रह से जुड़े हो सकते हैं और प्रश्नों के निर्माण में अंतर के कारण विभिन्न उत्तरदाताओं द्वारा दिए गए उत्तरों की तुलना करना मुश्किल हो जाता है।

उदाहरण के लिए, एक शोधकर्ता किसी समुदाय के सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन करना चाहता है। इसके लिए उसे पहले से कोई प्रश्न तैयार नहीं करना होगा, बल्कि समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत करनी होगी और फिर जैसे-जैसे बातचीत आगे बढ़ेगी सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में जानना होगा।

(iii.) अर्ध-संरचित साक्षात्कार: इनमें संरचित और असंरचित साक्षात्कार दोनों के घटक शामिल होते हैं। अर्ध-संरचित साक्षात्कार में, साक्षात्कारकर्ता सभी साक्षात्कारकर्ताओं द्वारा उत्तर देने के लिए समान प्रश्नों का एक सेट तैयार करता है। साथ ही, कुछ मुद्दों को स्पष्ट करने और/या आगे बढ़ाने के लिए साक्षात्कार के दौरान अतिरिक्त प्रश्न पूछे जा सकते हैं। अर्ध-संरचित साक्षात्कार के साथ, प्रश्न की खुली प्रकृति जांच के तहत विषय को परिभाषित करती है, लेकिन साक्षात्कारकर्ता और साक्षात्कारकर्ता को कुछ विषयों पर अधिक विस्तार से चर्चा करने का अवसर भी प्रदान करती है। यदि साक्षात्कारकर्ता को किसी प्रश्न का उत्तर देने में कठिनाई होती है या केवल संक्षिप्त प्रतिक्रिया देता है, तो साक्षात्कारकर्ता प्रश्न पर आगे विचार करने के लिए साक्षात्कारकर्ता को प्रोत्साहित करने के लिए इशारा या संकेतों का उपयोग कर सकता है। एक अर्ध-संरचित साक्षात्कार में, साक्षात्कारकर्ता को मूल प्रतिक्रिया के बारे में विस्तार से बताने या साक्षात्कारकर्ता द्वारा शुरू की गई पूछताछ की पंक्ति का पालन करने के लिए साक्षात्कारकर्ता की जांच करने की भी स्वतंत्रता होती है।

उदाहरण के लिए, एक नीति निर्माता यह अध्ययन करना चाहता है कि नई नीति डॉक्टरों के काम को कैसे प्रभावित करती है। इसके लिए वह प्रश्नों का एक सेट विकसित करता है (जैसे, 'क्या आप जानते हैं कि एक नई नीति बनाई गई है?', 'क्या

टिप्पणी

आपको लगता है कि यह स्वास्थ्य पेशेवरों के पक्ष में है?') और मौके पर प्रश्न जोड़ने की गुंजाइश भी रखता है प्रतिभागियों के उत्तरों के आधार पर (जैसे, यदि प्रतिभागी उत्तर देता है कि पॉलिसी उनके पक्ष में है, तो नीति निर्माता पूछ सकता है कि 'आपको क्या लगता है कि पॉलिसी का कौन सा हिस्सा डॉक्टरों के पक्ष में है?', और यदि प्रतिभागी कहता है यदि यह उनके पक्ष में नहीं है, तो वह सुझाए गए परिवर्तनों के बारे में पूछताछ कर सकता है जो नीति को उनके अनुकूल बना सकते हैं।)

अर्ध-संरचित साक्षात्कार के साथ, प्रश्न की खुली प्रकृति जांच के तहत विषय को परिभाषित करती है, लेकिन साक्षात्कारकर्ता के लिए अवसर भी प्रदान करती है और साक्षात्कारकर्ता कुछ विषयों पर अधिक विस्तार से चर्चा करेगा। बड़े पैमाने पर व्यवहारिक जानकारी एकत्र करते समय अर्ध-संरचित साक्षात्कार उपयोगी होते हैं। यदि साक्षात्कारकर्ता को किसी प्रश्न का उत्तर देने में कठिनाई होती है या वह केवल संक्षिप्त प्रतिक्रिया देता है, तो साक्षात्कारकर्ता संकेतों का उपयोग करके साक्षात्कारकर्ता को प्रश्न पर आगे विचार करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

आइये हम बॉक्स में दिए गए उदाहरण की मदद से साक्षात्कार की प्रक्रिया को समझें।

उदाहरण

साक्षात्कारी: 'मुझे आपकी राय सुननी है कि क्या सड़कों पर यातायात नियमों में हुए परिवर्तनों यातायात स्थिति को कैसे बदल दिया है।'

साक्षात्कारी: 'बिल्कुल! इसमें बड़ा बदलाव हुआ है। कोई संदेह नहीं।'

साक्षात्कारी: 'इसमें किस तरह का बदलाव हुआ है?'

साक्षात्कारी: 'मुझे लगता है कि लोग सड़कों पर सतर्कता बढ़ा रहे हैं और उनकी यातायात नियमों के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है।'

साक्षात्कारी: 'आपको लगता है कि इस तरह का बदलाव किस के कारण हुआ है?'

साक्षात्कारी: हाँ... मुझे लगता है कि सख्त मॉनिटरिंग (देखरेख) और यातायात नियमों के प्रभावशाली लागू होने की वजह से यह बहुत अच्छी तरह से काम कर रहा है। साथ ही, संशोधित यातायात जुर्माने ने लोगों को सड़कों पर सतर्क रहने के लिए भी मजबूर किया है।

साक्षात्कार आयोजित करना: जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, साक्षात्कार व्यक्तिगत रूप से या समूह सेटिंग में आयोजित किए जा सकते हैं। शोधकर्ता को पहले यह तय करना होगा कि वह एक समय में एक व्यक्ति का साक्षात्कार लेना चाहता है या एक साथ लोगों के समूह का। व्यक्तिगत या समूह दृष्टिकोण पर निर्णय लेने के बाद, उसे अब यह निर्णय लेने की आवश्यकता है कि वह साक्षात्कार की किस पद्धति का उपयोग करना चाहता है।

टिप्पणी

तौर-तरीकों के आधार पर गुणात्मक साक्षात्कार आयोजित करने के तीन प्राथमिक तरीके हैं:

आमने-सामने (फेस टू फेस): यहां शोधकर्ता और प्रतिवादी एक साथ मिलते हैं। यह सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली तकनीक है, और गैर-मौखिक व्यवहार पर ध्यान देने और लंबे समय तक संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाती है। आमने-सामने या व्यक्तिगत साक्षात्कार बहुत श्रमसाध्य होते हैं, लेकिन उच्च गुणवत्ता वाले प्रदत्त एकत्र करने का सबसे अच्छा तरीका हो सकते हैं। जब विषय बहुत संवेदनशील हो, यदि प्रश्न बहुत जटिल हों या यदि साक्षात्कार लंबा होने की संभावना हो तो आमने-सामने साक्षात्कार बेहतर होता है। इस मॉड्यूल में बाद में साक्षात्कार कौशल पर अधिक विस्तार से चर्चा की गई है।

प्रदत्त संग्रह के अन्य तरीकों की तुलना में, आमने-सामने साक्षात्कार अधिक लचीलेपन की पेशकश करता है। एक कुशल साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कार के उद्देश्य को समझा सकता है और संभावित उत्तरदाताओं को सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है; वे प्रश्नों को स्पष्ट कर सकते हैं, गलतफहमियों को दूर कर सकते हैं, संकेत दे सकते हैं, प्रतिक्रियाओं की जांच कर सकते हैं और नए विचारों का इस तरह से अनुसरण कर सकते हैं जो अन्य तरीकों से संभव नहीं है।

टेलीफोन: इसका उपयोग वहां किया जा सकता है जहां आमने-सामने साक्षात्कार संभव नहीं है, और यह उपयुक्त हो सकता है जहां विषय संवेदनशील नहीं है और गैर-मौखिक व्यवहार कम महत्वपूर्ण है। टेलीफोन कॉन्फ्रेंसिंग फोकस समूहों को सक्षम कर सकती है, लेकिन (टर्न टेकिंग) बारी आना और यह सुनिश्चित करने में बड़ी समस्याएं हैं कि सभी भाग लेने में सक्षम हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग इस प्रकार के दूरस्थ साक्षात्कार में एक और आयाम जोड़ती है।

टेलीफोन साक्षात्कार प्रदत्त एकत्र करने का एक बहुत प्रभावी और किफायती तरीका हो सकता है जहां संपर्क किए जाने वाले प्रतिदर्श (सैंपल) टेलीफोन के माध्यम से पहुंच योग्य होते हैं। वे बहुत वंचित आबादी के लिए प्रदत्त संग्रह का उपयुक्त तरीका नहीं हैं जहां टेलीफोन स्वामित्व कम होने की संभावना है। हालाँकि, टेलीफोन साक्षात्कार सामान्य चिकित्सकों जैसे व्यस्त पेशेवर उत्तरदाताओं के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त हो सकता है, जब टेलीफोन नंबरों को आसानी से पहचाना जा सकता है और समय पर नियुक्तियाँ निर्धारित की जा सकती हैं। टेलीफोन साक्षात्कार भी विशेष रूप से उपयोगी होते हैं जब साक्षात्कार किए जाने वाले उत्तरदाताओं को भौगोलिक रूप से व्यापक रूप से वितरित किया जाता है।

टेलीफोन साक्षात्कार का एक मुख्य नुकसान यह है कि इसमें दृश्य सहायता और संकेतों को शामिल करना मुश्किल है और उत्तरदाता कार्ड या स्केल नहीं पढ़ सकते हैं। टेलीफोन साक्षात्कार की अवधि भी सीमित है, हालाँकि यह विषय क्षेत्र और प्रेरणा के साथ अलग-अलग होगी। फिर भी टेलीफोन साक्षात्कार के लिए पूर्व नियुक्तियाँ करना और साक्षात्कार से पहले प्रतिवादी को देखने के लिए प्रोत्साहन सामग्री भेजना संभव है। एक पूर्व

टिप्पणी

नियुक्ति और कवरिंग पत्र प्रतिक्रिया दर और साक्षात्कार की अवधि को बढ़ा सकता है

वेब साक्षात्कार: इंटरनेट साक्षात्कार के लिए चैट रूम के माध्यम से अवसर प्रदान करता है, और गहन साक्षात्कार आयोजित करने की एक बढ़ती हुई विधि है। तालमेल स्थापित करने में स्पष्ट रूप से बड़ी समस्याएं हैं, और गैर-मौखिक व्यवहार पूरी तरह से छूट जाएगा। हालाँकि, कुछ शोध से पता चलता है कि उत्तरदाता इस प्रकार के प्रारूप में व्यक्तिगत मामलों के बारे में अधिक खुले रहने के इच्छुक हो सकते हैं। पहचान की प्रामाणिकता के मुद्दे भी एक मुद्दा हो सकते हैं। वेब का उपयोग करने के तरीकों में ई-मेल साक्षात्कार, बुलेटिन बोर्ड और इंटरैक्टिव वेब साइटें शामिल हैं। फोकस समूहों को अनुकरण करने के लिए चैट रूम का उपयोग किया जा सकता है।

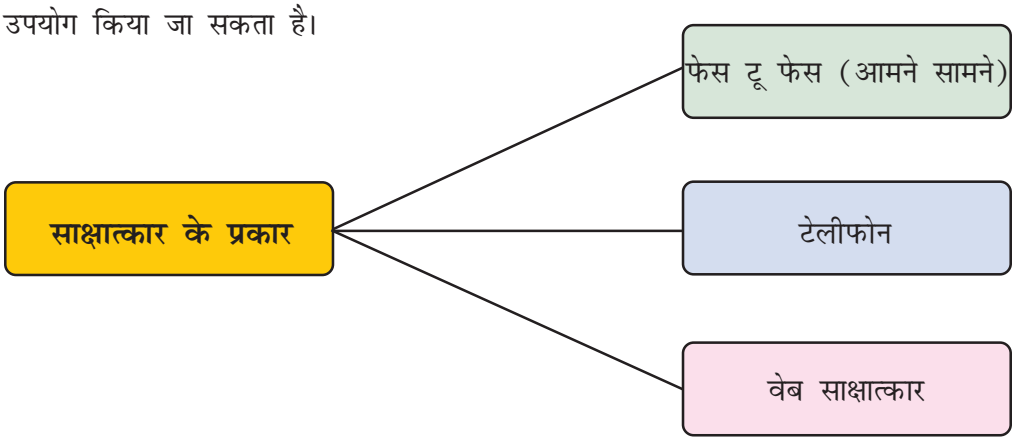

चित्र 4.3: साक्षात्कार आयोजित करने के तरीके

साक्षात्कार पद्धति की ताकत

- यह रुचि के क्षेत्र के बारे में गहन जानकारी प्रदान करता है।
- प्रदत्त की गुणवत्ता में सुधार करके अस्पष्टताओं और संदेहों को स्पष्ट किया जा सकता है।
- यह यह पता लगाने में मदद करता है कि व्यक्ति किसी विषय के बारे में कैसे सोचते और महसूस करते हैं और वे कुछ निश्चित विश्वास, मूल्य और राय क्यों रखते हैं।

साक्षात्कार पद्धति की सीमाएँ

- यह बहुत समय लेने वाला और महंगा हो सकता है।
- साक्षात्कारकर्ताओं को प्रभावी साक्षात्कार आयोजित करने के लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
- साक्षात्कार से प्राप्त प्रदत्त की गुणवत्ता कुछ हद तक प्रतिभागी और साक्षात्कारकर्ता दोनों के संचार कौशल पर निर्भर करती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 4.2

1. बताएं कि निम्नलिखित कथन 'सही' हैं या 'गलत'

   i. संरचित साक्षात्कार तुलनात्मक विश्लेषण को असंभव बना देते हैं। सही/गलत

   ii. केस अध्ययन तकनीक में किसी मामले के बारे में संक्षिप्त जानकारी शामिल होती है। सही/गलत

   iii. कोई घटना केस अध्ययन विश्लेषण का विषय हो सकती है। सही/गलत

   iv. असंरचित साक्षात्कार गहन जानकारी प्रदान करते हैं। सही/गलत

2. उत्तर दें कि निम्नलिखित प्रत्येक अध्ययन में सबसे उपयुक्त साक्षात्कार दृष्टिकोण (संरचित/अर्धसंरचित/असंरचित) कौन-सा है?

   i. एक शोधकर्ता प्रबंधक और अधीनस्थों द्वारा बताए गए कार्य संतुष्टि के मानदंड की तुलना करना चाहता है।

   ii. एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता किशोर लड़कियों में मासिक धर्म स्वच्छता के महत्व से संबंधित दृष्टिकोण का अध्ययन करना चाहता है।

   iii. एक मनोवैज्ञानिक असाध्य रूप से बीमार रोगियों के अनुभव को समझना चाहता है।

   iv. एक शोधकर्ता आज की दुनिया में सोशल मीडिया के महत्व के बारे में युवाओं की राय का अध्ययन करने में रुचि रखता है।

4.3 मनोवैज्ञानिक शोध में नैतिक चिंताएं

ब्रिटिश साइकोलॉजिकल सोसाइटी (बीपीएस) और अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए) ने मनोवैज्ञानिकों को मनोवैज्ञानिक अनुसंधान करते समय पालन करने का प्रयास करने के लिए एक नैतिक ढांचा प्रदान किया है। कुछ नैतिक चिंताएँ हैं:

i. **नुकसान से सुरक्षा:** शायद सबसे महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत यह है कि अनुसंधान के दौरान प्रतिभागियों को मनोवैज्ञानिक या अन्य नुकसान से बचाया जाना चाहिए। शोधकर्ताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिन भौतिक स्थितियों में अनुसंधान किया जा रहा है, वे प्रतिभागियों की शारीरिक भलाई के लिए हानिकारक नहीं हैं। इसी तरह, मनोवैज्ञानिक भलाई को भी संरक्षित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए: शोधकर्ता अपने प्रतिभागियों पर किसी भी अनुचित तनाव को रोकने के लिए हरसंभव प्रयास कर सकते हैं।

टिप्पणी

ii. **वापसी का अधिकार:** एक और नैतिक चिंता यह सुनिश्चित करना है कि प्रतिभागियों को शोध से हटने का अधिकार है। इसमें उन्हें केवल यह सूचित करना शामिल नहीं है कि वे किसी भी समय अध्ययन छोड़ सकते हैं, बल्कि उन्हें यह भी सूचित करना शामिल है कि उन्हें किसी भी समय अध्ययन से अपने परिणाम वापस लेने का अधिकार है।

iii. **गोपनीयता:** गोपनीयता बनाए रखना एक नैतिक सिद्धांत है जो यह सुनिश्चित करता है कि शोध के परिणाम गुमनाम और गोपनीय रखे जाएं। अनुसंधान और भागीदार जानकारी तक आगे की पहुंच को किसी भी प्रकार के दुरुपयोग से सुरक्षित रखा जाना चाहिए। आदर्श रूप से किसी को भी परिणामों से प्रतिभागियों की पहचान करने में सक्षम नहीं होना चाहिए।

iv. **सूचित सहमति:** किसी भी शोध के नैतिक होने के लिए, शोधकर्ता को प्रतिभागियों से सूचित सहमति प्राप्त करनी होगी। इस नैतिक सिद्धांत का 'सूचित' हिस्सा सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें प्रतिभागियों को अध्ययन की प्रकृति और वर्तमान शोध में उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाता है। उन्हें अध्ययन में शामिल जोखिमों और/या लाभों के बारे में भी बताया जाता है। यह सब उनकी जानकारी में लाए बिना प्रतिभागियों से सहमति प्राप्त करने का कोई फायदा नहीं है।

v. **धोखा (डिसेप्शन):** कुछ अध्ययनों के लिए आवश्यक है कि प्रतिभागियों को अध्ययन के वास्तविक उद्देश्य के बारे में पहले से सूचित न किया जाए, उदाहरण के लिए मिलग्राम (1963) का आज्ञाकारिता पर प्रयोग, जहां प्रतिभागियों को यह विश्वास दिलाया गया था कि वे साथी प्रतिभागियों (जो थे) को बिजली का झटका दे रहे हैं वास्तव में संघी (कंफेडरेट्स), जबकि वास्तव में इसमें कोई बिजली का झटका शामिल नहीं था। यह प्रयोग प्राधिकारी व्यक्ति के प्रति आज्ञाकारिता का अध्ययन करने के लिए आयोजित किया गया था। मांग की विशेषताओं और सामाजिक रूप से वांछनीय व्यवहार को रोकने के लिए अनुसंधान में धोखे का प्रमुख रूप से उपयोग किया जाता है जो प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं को प्रभावित कर सकता है।

vi. **डीब्रीफिंग:** अध्ययन होने के बाद प्रतिभागियों के साथ डीब्रीफिंग आयोजित की जाती है। यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि प्रतिभागियों को अध्ययन के इरादे के बारे में पता हो और एकत्रित प्रदत्त का उपयोग कैसे किया जाएगा। इसके कई उद्देश्य हैं। सबसे पहले, इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अध्ययन से किसी भी प्रतिभागी को किसी भी तरह से नुकसान न पहुंचे। दूसरे, इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शोधकर्ताओं ने डेटा के उपयोग के संबंध में सूचित सहमति प्राप्त की है। तीसरा, यह प्रतिभागियों को अध्ययन से अपने परिणाम निकालने का

टिप्पणी

अवसर देता है। अंत में, यह प्रतिभागियों को अध्ययन के बारे में कोई भी प्रश्न पूछने की अनुमति देता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे इसकी सामग्री को पूरी तरह से समझते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.3

उपयुक्त उत्तरों से रिक्त स्थान भरें

1. ..... को बनाए रखना एक नैतिक सिद्धांत है जो यह सुनिश्चित करता है कि शोध के परिणामों को गुमनाम रखा जाए।

2. एक अन्य नैतिक चिंता यह सुनिश्चित करना है कि शोध में प्रतिभागियों के पास ..... है।

3. शोध अध्ययन में प्रतिभागियों को शामिल ..... और/या ..... के बारे में भी सूचित किया जाता है।

4. धोखे (डिसेप्शन) का प्रमुख उपयोग शोध में..... और..... को रोकने के लिए किया जाता है जो प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं को प्रभावित कर सकता है।

5. ..... और ..... अनुसंधान करते समय पालन करने के लिए मनोवैज्ञानिकों की एक नैतिक ढांचा प्रदान करती है।

आपने क्या सीखा

नैतिक चिंताएं

- नुकसान से सुरक्षा
- वापसी का अधिकार
- गोपनीयता
- सूचित सहमति
- धोखा (डिसेप्शन)
- डीब्रीफिंग

टिप्पणी

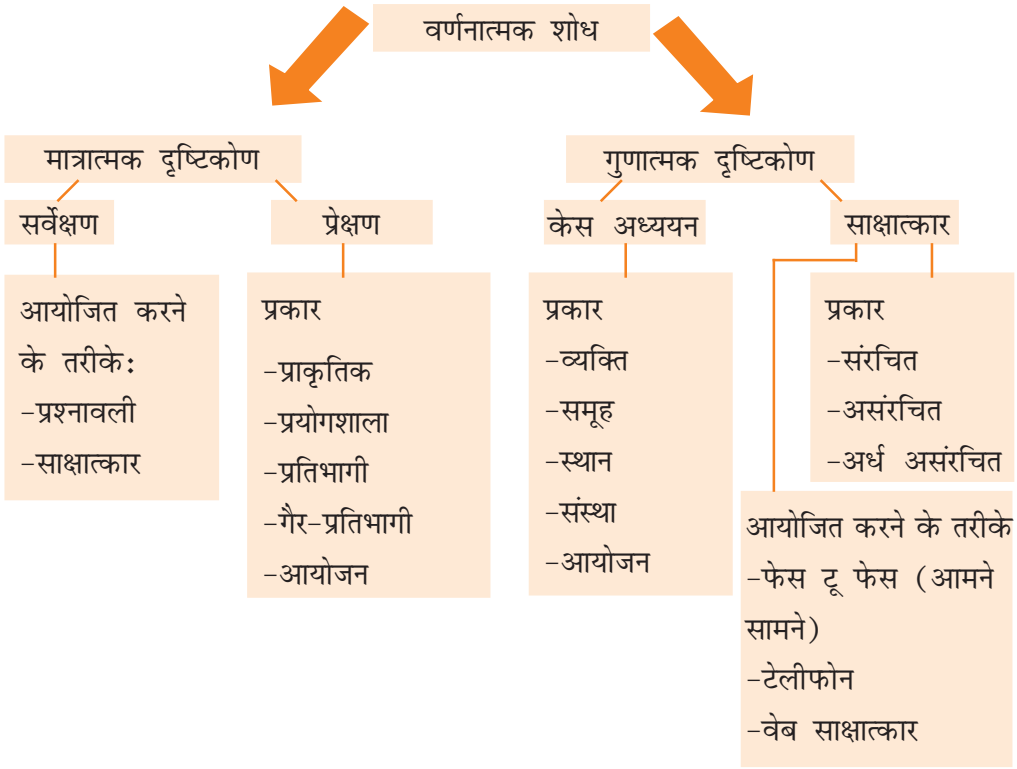

पाठांत प्रश्न

1. अनुसंधान के पार अनुभागीय (क्रॉस सेक्शनल) और अनुदैर्ध्य (लोंगितुडिनल) तरीके क्या हैं?
2. वर्णनात्मक अनुसंधान प्रयोगात्मक और सहसंबंधात्मक शोध से किस प्रकार भिन्न है?
3. विभिन्न प्रकार की अवलोकन तकनीकों को उनकी शक्तियों और सीमाएँ सहित समझाइए?
4. शोध की केस अध्ययन पद्धति की विस्तार से चर्चा करें।
5. साक्षात्कार के विभिन्न प्रारूपों के बीच अंतर करें।
6. मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में विभिन्न नैतिक चिंताओं की सूची बनाएं?
7. केस अध्ययन पद्धति की विभिन्न ताकतें और सीमाएँ क्या हैं?
8. तौर तरीकों के आधार पर गुणात्मक साक्षात्कार आयोजित करने के विभिन्न प्राथमिक तरीकों की तुलना करें।
9. सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत प्रश्नावली में किस प्रकार के प्रश्न शामिल है?

टिप्पणी

10. व्यवहार की विभिन्न श्रेणियों का अध्ययन करने के लिए अवलोकन पद्धति का उपयोग किया जाता है। व्यवहार की विभिन्न श्रेणियों को पहचानें।

11. केस अध्ययन की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. (i.) गलत

   (ii.) सही

   (iii.) गलत

2. (i.) (स)

   (ii.) (अ)

   (iii.) (ब)

4.2

1. (i.) सही

   (ii.) गलत

   (iii.) सही

   (iv.) सही

2. (i.) संरचित

   (ii.) अर्ध संरचित

   (iii.) असंरचित

   (iv.) अर्ध संरचित

4.3

1. गोपनीयता

2. वापसी का अधिकार

टिप्पणी

3. जोखिम और/या लाभ
4. विशेषताओं और सामाजिक रूप से वांछनीय व्यवहार
5. ब्रिटिश साइकोलॉजिकल सोसायटी (बीपीएस) और अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए)